Parshuram

Ancient India is known for the figures and personalities who gave precedence to societal welfare and Dharma over their personal comforts and benefits. Bhagwan Parshuram, a mythological figure from ancient India is believed to be the 6th incarnation of Lord Vishnu. In Indian philosophy the concept of Avatar (incarnate) holds a special position. It gives hope, creativity and passion to humanity.

Born in a Brahmin family, Parshuram, son of Sage Jamadagni and Renuka was born in *Treta Yuga* and is known for his methods of warfare and sense of righteousness. He conducted the *Ashwamedha* sacrifice and gave his entire belongings to the priest who conducted the ritual.

Parshuram is a figurine from ancient India whose references come in Puranas and other historical documents. The Mahabharata and Ramayana, both include him in pivotal roles including being guru to Bhishma, Dronacharya and Karna. He taught Karana extremely powerful *Brahmastra technique*. He also cursed him that the knowledge would be useless to Karana, predicting much in advance that Karana would join the unrighteous Duryodhana in the Kurukshetra war. Such was his love for righteousness. It is said that Bhagwan Parshuram was destined to free the earth's burden by assassinating the sinful and irreligious rulers, who neglected their duties.

Bhagwan Parshuram was well versed with the four *Vedas* and sports the bow and arrow upon his back. It is said that he received the axe after undertaking penance to please Lord Shiva.

There are several Parshuram temples throughout the western coast of India as well as North India, but specially more in the coastal areas from Baruch in Gujarat right upto Kerala. In South India at the holy place Pajaka near Udipi, there exist a temple of Parshuram. Parshuram, the creator of the Konkan coast is also worshipped in Maharashtra's Ratnagir District. The people of Konkan call their land 'Parshuram Bhoomi', in accordance with the legend that the sage reclaimed the land from the sea. One can see a Parshuram temple with a Agni Mandir in Shivpuri in Maharashtra and Fort Songadh in Gujarat.

Parshuram is known for his divine qualities who established Dharma. He showed reverence for the qualities, potential and truth and not for the titles of birth related privileges. He is the reformist in the true sense of world.

Bhagwan Parshuram was highly objective and was tough and fair to punish the *Adharmic*. He raised his axe against all, who violated the contemporary code of conduct from the societal point of view.

Life of Parshuram is an example of courage, unwavering resolve, fairness, empathy with the downtrodden, indifference towards the powerful, objectivity in decision making and absolute stillness irrespective of the situation.

Parshuram Jayanti is celebrated every year on *Akshaya Tritya* in the month of May. The day marks the beginning of the *Treta* Yuga and his believe that good deeds done on the day are preserved forever. The spiritual seekers celebrate this day by fasting and Satsang.

Department of Posts is pleased to release a Commemorative Postage Stamp on Parshuram, the great warrior sage of ancient India whose teachings of righteousness, fairness and objectivity is an inspiration to all human beings.

Credits :

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Shri Suresh Kumar
Text	:	Referenced from the contents provided by the proponent.

भारतीय डाक
India Post

डाक विभाग
Department of Posts

विवरणिका
BROCHURE



परशुराम

Parshuram

परशुराम

प्राचीन भारत में ऐसे विराट व्यक्तित्व हुए हैं, जिन्होंने निजी सुख–सुविधाओं के बजाए सामाजिक कल्याण और धर्म को प्राथमिकता दी। भगवान परशुराम, प्राचीन भारत के ऐसे ही विराट व्यक्तित्व हुए हैं। उन्हें भगवान विष्णु का छठा अवतार माना जाता है। भारतीय शास्त्रों में अवतार की अपार महिमा है। अवतारी पुरुषों से मानव–मात्र में आशा की किरण के साथ–साथ सृजनशीलता तथा उत्साह का संचार होता है।

परशुराम का जन्म त्रेता युग में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ। ऋषि जमदग्नि और रेणुका के पुत्र परशुराम को उनके युद्ध कौशल तथा धर्मपरायणता के लिए जाना जाता है। उन्होंने अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया और अपनी सारी संपति यज्ञ करवाने वाले पुजारी को दान कर दी।

भगवान परशुराम प्राचीन भारत के ऐसे महान व्यक्तित्व थे, जिनके संदर्भ पुराणों और अन्य ऐतिहासिक दस्तावेजों में भी मिलते हैं। महाभारत और रामायण, दोनों ही महाकाव्यों में उनकी भूमिका को अत्यंत महत्वपूर्ण रूप में दर्शाया गया है। वे भीष्म, द्रोणाचार्य और कर्ण के गुरु थे। उन्होंने कर्ण को महाशक्तिशाली ब्रह्मास्त्र चलाना सिखाया। परशुराम की धर्मपरायणता इस प्रकार की थी कि उन्होंने कर्ण को यह श्राप भी दिया कि उसका यह ज्ञान उसके लिए व्यर्थ सिद्ध होगा। उन्होंने बहुत पहले ही यह भविष्यवाणी कर दी थी कि कुरुक्षेत्र के युद्ध में कर्ण, अधर्मी दुर्योधन का साथ देगा। यह भी मान्यता है कि यह विधि का विधान था कि भगवान परशुराम ऐसे पापी और अधर्मी शासकों का संहार कर धरती का बोझ कम करेंगे, जो अपने कर्तव्यों से विमुख हो चुके थे।

भगवान परशुराम चारों वेदों के परम ज्ञाता थे और पीठ पर धनुष–बाण धारण करते थे। कहा जाता है कि परशुराम ने कड़ी तपस्या कर भगवान शिव को प्रसन्न करने के उपरांत फरसा प्राप्त किया था।

भारत के समूचे पश्चिमी तट के साथ–साथ उत्तर भारत में भी परशुराम के अनेकानेक मंदिर हैं। वहीं गुजरात के भरूच से लेकर केरल तक के तटीय इलाकों तक इन मंदिरों की संख्या विशेष रूप से अधिक है। दक्षिण भारत में उडुपी के निकट पाजका नामक पवित्र स्थल पर भी भगवान परशुराम का एक भव्य मंदिर स्थित है। परशुराम को कोंकण तट का सर्जक भी माना जाता है और महाराष्ट्र के रत्नागिरि जिले में उनकी पूजा की जाती है। एक पौराणिक कथा के अनुसार ऋषि परशुराम ने समुद्र से धरती को वापस लिया था। अतः कोंकण के लोग अपने क्षेत्र को 'परशुराम भूमि' कहते हैं। महाराष्ट्र के शिवपुरी में अग्नि मंदिर के साथ तथा गुजरात के सोनगढ़ दुर्ग में भी भगवान परशुराम का मंदिर स्थित है।

भगवान परशुराम को उनके दैवीय गुणों के लिए जाना जाता है। उन्होंने धर्म की संस्थापना की। परशुराम ने सदैव व्यक्तियों के गुणों, क्षमता एवं उनकी सदाशयता को महत्व दिया, न कि जन्मजात अधिकारों को। वे सच्चे अर्थों में समाज–सुधारक थे।

भगवान परशुराम का व्यक्तित्व पूर्णतः निष्पक्ष भाव वाला था और वे अधर्मी लोगों को न्यायोचित ढंग से दंड देते थे। उन्होंने बिना किसी भेद–भाव के हर उस व्यक्ति के विरुद्ध फरसा उठाया, जिसने सामाजिक दृष्टिकोण से तत्कालीन आचरण संहिता का उल्लंघन किया।

भगवान परशुराम का समस्त जीवन साहस, दृढ़ संकल्प, निष्पक्षता, निर्बल लोगों के प्रति सहानुभूति, शक्तिशाली वर्गों के प्रति संतुलित उदासीनता, निष्पक्ष रूप से निर्णय लेने की क्षमता और हर परिस्थिति में स्थितप्रज्ञ रहने का उत्कृष्ट उदाहरण है।

परशुराम जयंती प्रत्येक वर्ष मई माह में अक्षय तृतीया के दिन मनाई जाती है। यह दिन त्रेता युग की शुरुआत का प्रतीक है। लोक मान्यता है कि इस दिन किए गए सत्कर्मों का प्रताप सदा बने रहता है। श्रद्धालु इस दिन उपवास रख कर सत्संग में शामिल होते हैं।

भारतीय डाक, प्राचीन भारत के महान योद्धा ऋषि परशुराम पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है, जिनके द्वारा दिया गया धर्मपरायणता, न्यायप्रियता तथा निष्पक्षता का उपदेश समस्त मानव जाति के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

आभार:

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण कैशे : श्री सुरेश कुमार

पाठ : प्रस्तावक से प्राप्त सूचना के आधार पर

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसे
Denomination	: 500 p
मुद्रित डाक–टिकटें	: 201600
Stamps Printed	: 201600
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00